Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies

Volume-1, Issue-2 (April – June, 2025) pp.01-06, ISSN: 3107-5088
www.cognitivethinking.in

सहारनपुर में उपनिवेशवाद का प्रारंभ : 1803 से 1857 तक का प्रशासनिक इतिहास

डॉ० दीपक कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
एस०एस०वी० कॉलेज, हापुड़

Corresponding Author
डॉ० कुलदीप सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
मोतीलाल नेहरू कॉलिज (सांध्य), नई दिल्ली

सारांश (Abstract):

द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध के दौरान सिंधिया व अंग्रेजों के बीच हुई सुर्जी अर्जनगाँव की सन्धि ने राजधानी दिल्ली व उसके आस–पास का समस्त क्षेत्र अंग्रेजों के हवाले कर दिया परिणामस्वरूप सहारनपुर सहित सम्पूर्ण गंगा–यमुना दोआब भी ब्रिटिशों को मिल गया। चाहे महाभारत काल रहा हो या मौर्यकाल, गुप्त काल अथवा सल्तनत काल या मुगल काल रहा हो किसी भी कालखंड में गंगा यमुना दोआब और विशेषकर ऊपरी गंगा यमुना दोआब जिसमें सहारनपुर और आस पास के क्षेत्र आते हैं, का अपना विशेष महत्व रहा है और अंग्रेज भी इससे भली भांति परिचित थे इसलिए उन्होंने इस क्षेत्र पर अधिकार जमाने के बाद कभी अपनी पकड़ को ढ़ीली नहीं होने दिया। इसके लिए उन्होंने यमुना पार कर हरियाणा में सिक्खों पर भी हमले किये होल्कर के भी लगातार हो रहे हमलों को विफल किया। क्षेत्रीय सरदारों जैसे शेर सिंह, राय सिंह आदि के साथ भी लोहा लिया। कुंजा बहादुरपुर के विजय सिंह गूजर के साथ भी घमासान युद्ध किया परन्तु अपना प्रभाव सहारनपुर में कम नहीं होने दिया। इस प्रकार कुछ भारतीयों की मातृभूमि के साथ गद्दारी व अपनी कूटनीति के बल पर अंग्रेज सहारनुपर जनपद में अपने उपनिवेशिक प्रशासन की शुरुआत करने में सफल रहे।

शब्द कुंजी :–सहारनपुर, कर्नल बर्न, मिस्टर गुथरी, गंगा यमुना दोआब, विजय सिंह गूजर, सिक्ख आक्रमण।

प्रस्तावना

औरंगजेब की मृत्यु के बाद से 1803 ई० तक सहारनुपर और उसके आस पास के क्षेत्रों में सम्य–समय पर विभिन्न राजनीतिक गुटों में संघर्ष होते रहे। सम्पूर्ण 18वीं शताब्दी में सहारनपुर में राजनीतिक अस्थिरता का माहौल बना रहा, कभी बंदा सिंह बहादुर के नेतृत्व में सिक्खों ने गंगा–यमुना दोआब में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तो कभी सैय्यद बंधुओं ने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था और मुगल सम्राटों को अपने इशारों पर नचाया। कभी नजीबउदौला, जाबिता खां व गुलाम कादिर ने इस क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित किया तो कभी यमुना पार से बार–बार सिक्ख आक्रमण होते रहे। समय–समय पर मराठों के भी निरंतर गंगा–यमुना दोआब में आक्रमण होते रहे। अंततः 1803 ई० में 30 दिसम्बर को हुई सुर्जी–अर्जनगाँव[1] की सन्धि से मराठों ने दिल्ली और उसके आस–पास के क्षेत्र, जिनमें सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ भी आते थे, अंग्रेजों को सौंप दिये और अब गंगा–यमुना दोआब अंग्रेजों के अधीन आ गया और एक शताब्दी से चला आ रहा विभिन्न क्षेत्रीय प्रशासन समाप्त हुआ और अब से उपनिवेशवाद[2] का विस्तार प्रारम्भ हुआ।

सितम्बर 1804 ई० में राजधानी दिल्ली के निकट हुई एक मुठभेड़ के बाद कर्नल बर्न[3] ने अपनी सेना के साथ इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया परन्तु संकट के बादल अभी छंटे नहीं थे क्योंकि कर्नल बर्न अभी ठीक से इस युद्ध से बाहर नहीं आया था कि उसे सिक्खों के अचानक हुए हमले की खबर मिल गयी। खबर मिलते ही तुरंत एक सेना की टुकड़ी लेफ्टिनेंट बर्च के साथ इस इलाके में भेजी गयी और उसे जुम्मस नदी के घाटों पर निगरानी करने का आदेश दिया गया। दूसरी तरफ राजधानी दिल्ली की रक्षा के लिए हाई कमान से तत्काल सैनिक सहायता भेजने का अनुरोध किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए उनका यह अनुरोध बिना किसी विलंब के स्वीकार कर लिया गया। सेनानायक जेम्स स्किनर को तुरंत एक घुड़सवार रेजीमेंट के साथ भेजा गया। जेम्स स्किनर ने यमुना पार करके सिक्ख सेना के मुख्य ठिकानों पर तेजी से हमले कर दिये इन अचानक से हुए हमलों का सिक्खों के पास कोई जवाब नहीं था परिणामस्वरूप वे बुरी तरह पराजित हुए।

सिक्खों की पराजय के बाद मामला शांत होता नजर आ रहा था लेकिन तभी होलकर के दत्तक पुत्र हरनाथ ने सहारनपुर से सैनिकों को बुला लिया और राजधानी की ओर कूच किया। मराठों की इस आक्रमक नीति की खबर ने राख तले पड़ी चिंगारी को फिर से सुलगा दिया। मराठों के आक्रमण का लाभ उठाने के लिए जगाधरी के राय सिंह[4] और बुरिया के शेर सिंह ने अपनी–अपनी सेनाओं के साथ राजघाट के समीप यमुना पार करके दोआब पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने दमझेरा व सुल्तानपुर को कब्जे में ले लिया फिर चिलकाना में सैय्यदों के हल्के–फुल्के प्रतिरोध को रौंदते हुए सहारनपुर पर हमला कर दिया हमला इतना भयानक था कि यहाँ उपस्थित ब्रिटिश अधिकारी गुथरी[5] को आक्रमक नीति की बजाय सुरक्षात्मक नीति अपनाने के लिए बाध्य होना पड़ा और उसने गुलाम कादिर के किले में खुद को बंद करके अपनी जान बचाई।

इस विकट स्थिति की खबर जैसे ही कर्नल बर्न को मिली, वह तुरंत दो बटालियन पैदल सेना व छः तोपो को लेकर तेजी से सहारनपुर की ओर चल दिया लेकिन इससे भी भयंकर स्थिति उसका इंतजार कर रही थी। जैसे ही वह कांधला (मुजफ्फरनगर) के पास से गुजर रहा था। होल्कर की विशाल सेना ने उसे चारों तरफ से घेर लिया अपनी जान बचाने के लिए उसने शामली के किले में शरण ली। जो कर्नल बर्न सहारनपुर में फंसे गुथरी की सहायता के लिए चला था अब स्वयं उसे अपनी जान बचाने के लिए सहायता की आवश्यकता थी अब कर्नल बर्न की सहायता के लिए और मराठों को कड़ा जवाब देने के लिए जनरल लेक ने स्वयं कमान संभाली। लार्ड लेक[6] के आने की खबर सुनकर मराठों ने कर्नल बर्न की घेराबंदी हटा ली और मेरठ की ओर पलायन कर गये। उधर कर्नल बूरा ने खतौली के क्षेत्र में अपना सैनिक अभियान चलाये रखा उनके साथ गुथरी भी था। जिसे बेगम समरु ने अपनी रेजीमेंट भेजकर सहारनपुर घेराबंदी के दौरान बचा लिया था। इन सब घटनाओं के बीच सिक्ख सेना ने भी अपने हमलों में तेजी ला दी थी लेकिन मुजफ्फरनगर में आगे बढ़ती हुई ब्रिटिश सेना ने थाना भवन से गुरुदत्त सिंह को खदेड़ दिया।

सिक्खों ने इस घटना से सबक लेते हुए अपनी सभी सैनिक टुकड़ियों को इकट्ठा किया साथ ही अपनी सेनाओं में जिले और आस पास के गूजरों व रांगरों को भी शामिल कर लिया और देवबंद से सात मील की दूरी पर हिंदन नदी के किनारे एक मोर्चे का निर्माण किया। 24 नवम्बर 1804 को युद्ध हुआ, परन्तु कर्नल बर्न के साथ आई हुई एक अनियमित घुड़सवार सेना के कारण उसे तुरंत वांछित परिणाम नहीं मिल सके। इन घुड़सवारों की इस युद्ध में भूमिका संदेह के घेरे में रही। वास्तव में इस युद्ध का फैसला ब्रिटिश सेना के साथ उपस्थित तोपखाने ने किया। ब्रिटिश सेना और सिक्ख सेना के बीच यही हथियार एक अंतर पैदा कर रहा था क्योंकि सिक्ख सेना के पास तोपखाना नहीं था। इस युद्ध मंगलौर के काजी मुहम्मद अली ने अंग्रेजों की भरपूर सहायता की। युद्ध के दौरान शेर सिंह एक पैर से अपाहिज हो गये। इस दर्दनाक स्थिति में उसका चाचा राय सिंह उसे युद्ध भूमि से निकालकर बुरिया ले गया जहाँ शेर सिंह ने दम तोड़ दिया।

भले ही इस युद्ध में सिक्खों की पराजय हो गयी परन्तु उन्होंने हौसला नहीं गंवाया और फिर से जिले पर आक्रमण किया और सहारनपुर के महत्वपूर्ण क्षेत्र देवबंद व रामपुर मनिहारन पर अधिकार स्थापित कर लिया। साथ ही मुजफ्फनगर का थाना भवन भी उनके कब्जे में आ गया। यह सुनकर कर्नल बर्न अपनी सेना के साथ थाना भवन पर आक्रमण करने के लिए चल पड़ा। उसका इरादा गंगोह तहसील के .एक गाँव घोलू में सिक्ख सेना पर 19 दिसम्बर को चुपके से अचानक आक्रमण करने का था परन्तु उसका यह इरादा नाकाम रहा क्योंकि सिक्खों को पहले ही इसकी खबर मिल गई थी और वे कर्नल बर्न के आक्रमण से पहले ही चिलकाना के रास्ते यमुना पार पर चुके थे। बर्न ने यमुना नदी तक सिक्ख सेना का पीछा किया परन्तु यमुना नदी से आगे वह नही गया क्योंकि हाई कमान से

उसे यमुना नदी को पार न करने का आदेश मिला था इसलिए वह वापस मुख्यालय लौट आया।

सहारनपुर में अभी भी शान्ति स्थापित नहीं हो पायी थी। कर्नल बर्न को हाई कमान की ओर से गंगा के घाटों पर निगरानी रखने का आदेश जारी किया गया था। ब्रिटिश हाई कमान को आक्रमण की आशंका बनी हुई थी। किसी भी आक्रमणकारी के प्रयासों के विफल करने के लिए झिंड के भाग सिंह व कैथोल के लाल सिंह को सहारनपुर का प्रभार सौंपते हुए चौकन्ना रहने को कहा और स्वयं मीरापुर (मुजफ्फरनगर) में ब्रिटिश सेनानायक गुथरी से मिल के आगे की ओर अभियान करने की सोचने लगा परन्तु इससे पहले कोई रणनीति बना पाते हाई कमान ने कर्नल बर्न को तुरंत रोहिलखंड पहुँचने के आदेश जारी कर दिये। इसी समय सिक्ख सेना ने फिर से अपनी गतिविधियाँ प्रारम्भ कर दी गुरुदत्त सिंह को होलकर से प्रोत्साहन मिला हुआ था और साथ ही यमुना पार से भी उसकी मदद हेतु सिक्ख सेनाएँ कांधला पहुँच गयी थी।

गुथरी इस समय मेरठ के फजलगढ़ किले में ठहरे हुए थे। उसने लंढौरा के रामदयाल को और मरहल के मुहम्मदी खां को संदेश भिजवाया कि वे सिक्खों के किसी भी संभावित आक्रमण के लिए अपनी पूर्ण तैयारी रखे। इस बीच सिक्खों ने थाना भवन को अपना लक्ष्य बनाया परन्तु वे नाकाम रहे क्योंकि उन्हें वहाँ के काजी ने बुरी तरह पराजित कर दिया लेकिन मेरठ के आस–पास के क्षेत्रों में अभी भी सिक्ख हमले जारी थे। कर्नल बर्न ने आक्रमक नीति का अनुसरण करते हुए यमुना पार पहुँचकर सिक्खों के ठिकानों पर आक्रमण शुरु कर दिये और सिक्ख सैन्य गतिविधियों के प्रमुख ठिकाने करनाल कर अधिकार कर लिया और सिक्खों के निरंतर हो रहे आक्रमणों पर एक तरह का अंकुश लग गया।

इसके पश्चात एक लंबे अरसे तक सहारनपुर जनपद में शांति का वातावरण रहा एक–दो छोटी–मोटी घटनाओं के अतिरिक्त कोई विशेष गतिविधि यहाँ दृष्टिगोचर नहीं हुई। 1813 में लंढौरा के रामदयाल की मृत्यु के बाद उसकी विशाल जागीर की प्राप्ति को लेकर एक विद्रोह खड़ा हुआ था परन्तु अंग्रेजों ने इसे बड़ी सरलता से दबा दिया। लार्ड हार्डिंग के समय 1814 में लड़े गये आंग्ल–नेपाल युद्ध का सहारनपुर पर कोई खास प्रभाव देखने को नहीं मिला परन्तु कहीं न कहीं इसी नेपाल युद्ध के कारण एक अप्रत्यक्ष प्रभाव 1817 के एक विनियमन प्ट में देखने को मिला जब देहरादून को भी सहारनपुर जनपद में मिला दिया गया परन्तु यह भौगोलिक बदलाव ज्यादा दिन नहीं चला। 1825 में देहरादून को सहारनपुर से अलग करके कुमायूँ के साथ विलय कर दिया गया।

1824 ई० में इस क्षेत्र में अंग्रेजी सेना को दो गूजरों ने कड़ी चुनौती दी। इनमें से एक कलवा नामक गूजर था तथा दूसरा विजय सिंह[7] था जोकि कुंजा बहादुरपुर का एक ताल्लुकेदार था बताया जाता है कि वह लंढौरा के रामदयाल का रिश्तेदार भी था। विजय सिंह ने ब्रिटिश अधिकारियों की अनभिज्ञता में ही एक विशाल सेना एकत्रित करके भगवानपुर

शहर पर आक्रमण कर दिया और अंग्रेजी खजाने की एक गाड़ी को भी लूट लिया। जब यह बात सहारनपुर के तत्कालीन मजिस्ट्रेट ग्रिंडल को पता चली तो उसने गोरखा सैनिकों की एक बटालियन लेकर तुरंत विजय सिंह पर हमला कर दिया घमासान संघर्ष हुआ पूरे दिन भीषण मारकाट जारी रही। एक कड़ा प्रतिरोध करने के बाद अंततः विजय सिंह पराजित हुआ। इस भयंकर युद्ध में दो सौ से ज्यादा व्यक्तियों ने अपना बलिदान दिया। सैकड़ों लोग घायल भी हुए बाद में अंग्रेजों को ज्ञात हुआ कि यह योजनाबद्ध संग्राम था और बहुत बड़ी क्रांति की योजना थी। जिसके लिए दूसरे क्षेत्रों से भी व्यक्ति आ रहे थे परन्तु अंग्रेजों द्वारा की गयी इस सैन्य कार्यवाही में प्रमुख व्यक्तियों के हताहत होने से क्रांति की पूरी योजना पर पानी फिर गया। इस भीषण नरसंहार के बाद यह क्षेत्र लगभग दो दशक एक दो छिट–पुट घटनाओं को छोड़कर बिल्कुल शांत रहा और अगली ऐतिहासिक घटना 1857 का स्वतंत्रता संग्राम[8] ही था जब सहारनपुर के इस क्षेत्र में सरगर्मियाँ देखी गई।

निष्कर्ष

लार्ड लेक द्वारा दिल्ली पर अधिकार किये जाने के बाद सहारनपुर और आस पास के क्षेत्रों का राजनीतिक परिदृश्य बदल गया। अब यहाँ का संघर्ष ब्रिटिश बनाम भारतीय हो गया। यमुना पार से सिक्खों ने भी समय–समय पर दोआब में अपनी दस्तक दी और कुंजा के विजय सिंह गूजर आदि ने भी अंग्रेजों को चुनौतियाँ पेश की परन्तु ब्रिटिशों का कुछ देशद्रोहियों ने साथ दिया। जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने अपनी पकड़ ढीली नहीं होने दी। 1857 की क्रांति तक यहाँ अंग्रेजों ने अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सरकार, जदूनाथ, फाल ऑफ द मुगल एम्पायर, वाल्यूम 4, कलकत्ता, एस०सी० सरकार एंड संस, 1950, पृ० 337
2. स्पीयर, पर्सीवल – ट्रविलाइट ऑफ मुगल्स : स्टड्रीज इन लेट मुगल दिल्ली, न्यू दिल्ली ओरियंट बुक रिप्रिंट कार्पोरेशन, रिप्रिंट दिसम्बर 1969, पृ० 32
3. नेविल, एच०आर० – सहारनपुर गजैटियर्स, वाल्यूम 2 ऑफ द डिस्ट्रिक्ट गजैटियर्स ऑफ द यूनाइटेड प्रोविंसेज आगरा एंड अवध, लखनऊ, यूनाइडेट प्रोविंसेज गर्वनेमेंट प्रेस, 1921, पृ० 195
4. वही पृ० 196
5. वही पृ० 197
6. पीयर्स, कर्नल, ह्यूज – मैमोरी ऑफ द लाइफ एंड मिलिट्री सर्विसेज ऑफ विशकाउण्ट लेक, लंदन, 1908, पृ० 282
7. सहारनपुर गजैटियर्स 1921, पूर्वोक्त, पृ० 198

8. नेविल, एच०आर० मेरठ गजैटिसर्य वॉल्यूम 4 ऑफ द डिस्ट्रिक्ट गजैटियर्स ऑफ द यूनाइटेड प्रोविंसेज ऑफ आगरा एंड अवध, इलाहाबाद : यूनाइटेड प्रोविंसेज गर्वनमेंट प्रेस, 1903, पृ० 168

*This research paper was accepted on 20-05-2025 and published on 30-06-2025. *